झंकार

इस शरीर की सकल शिराएँ
हों तेरी तंत्री के तार,
आघातों की क्या चिंता है,
उठने दे ऊँची झंकार।

नाचे नियति, प्रकृति सुर साधे
सब सुर हों सजीव, साकार
देश देश में, काल काल में
उठे गमक गहरी गुंजार।

कर प्रहार, हाँ, कर प्रहार तू
भार नहीं, यह तो है प्यार,
प्यारे और कहूँ क्या तुझसे
प्रस्तुत हूँ मैं, हूँ तैयार।

मेरे तार तार से तेरी
तान तान का हो विस्तार
अपनी अँगुली के धक्के से
खोल अखिल श्रुतियों के द्वार।

ताल ताल पर भाल झुका कर
मोहित हों सब बारंबार
लय बँध जाय और क्रम क्रम से
सम में समा जाय संसार॥

अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि ने अपने शरीर की सकल शिराओं को किस तंत्री के तार के रूप में देखना चाहा है ?
2. कवि को आघातों की चिंता क्यों नहीं है ?
3. कवि ने समूचे देश में किस गुंजार के गमक उठने की बात कही है ?
4. 'कर प्रहार, हाँ कर प्रहार तू,
   भार नहीं, यह तो है प्यार,'
   यहाँ किससे प्रहार करने के लिए कहा जा रहा है । यहाँ भार को प्यार कहा गया है । इसका क्या अर्थ है ?
5. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -

   (क) मेरे तार तार से तेरी
   तान तान का हो विस्तार
   अपनी अँगुली के धक्के से
   खोल अखिल श्रुतियों के द्वार ।

   (ख) ताल ताल पर भाल झुका कर
   मोहित हों सब बारंबार
   लय बँध जाय और क्रम क्रम से
   सम में समा जाय संसार ।।
6. कविता का केंद्रीय भाव क्या है ? अपने शब्दों में लिखें ।
7. कविता में सुरों की चर्चा है । इनके सजीव-साकार होने का क्या अर्थ है ?
8. इस कविता का स्वाधीनता आंदोलन से कोई सांकेतिक संबंध दिखाई पड़ता है । यदि हाँ ! तो कैसा ?
9. वर्णनात्मक कविता लिखने के लिए 'द्विवेदी युग' के कवि प्रसिद्ध थे, किंतु इस कविता में छायावादी कवियों जैसी शब्द योजना, भावाभिव्यक्ति एवं चेतना दिखलाई पड़ती है । कैसे ? इस पर विचार करें ।

कविता के आस-पास

1. यह कविता मैथिलीशरण गुप्त की है । गुप्त जी को राष्ट्रकवि कहा गया है । इस संदर्भ में विशेष जानकारी प्राप्त करें ।
2. गुप्त जी स्वाधीनता आंदोलन से जुड़े हुए थे । स्वाधीनता आंदोलन से सक्रिय रूप से जुड़े हिंदी के पाँच

के बाद की सबसे बड़ी विभूति हैं । उन्होंने हिंदी कविता को अपनी अशेष अपराजेय प्राणशक्ति से सींचा । उस महाप्राण कवि की अप्रतिहत जीवनीशक्ति पाकर वह शत-सहस्त्र अंकुरों में पल्लवित होकर अनेक पथों पर फैल चली । नए युग में हिंदी कविता को निरे पद्य के दुर्गम दुर्ग से उबारकर अरुद्ध प्रकाश, वायु, जल और आकाश वाले प्रशस्त क्षेत्र में लानेवाले कवियों में निराला निर्विवाद रूप से प्रमुख हैं । तुलसीदास की तरह ही उनके पास कविता के बहु-विपुल स्रोत थे, अनुभव का अर्छीज खजाना था, शब्दार्थ-प्रतिपत्ति की अपरिमित भूमि और भंगिमाएँ थीं । निराला का भाषा, भाव और अभिव्यक्ति कला पर ही असाधारण अधिकार नहीं था; प्रकृति और समाज का गहन पर्यवेक्षण, व्यापक मानवीय करुणा तथा संवेदना और सहानुभूति की मर्म-संपदा भी उनके कोष में असाधारण थी । जीवन और सृजन के दोनों धरातलों पर आजीवन दुर्दम संघर्ष करते हुए अपराजित जिजीविषा के इस कवि ने दोनों हाथों से अनवरत आत्मदान किया, अपनी मर्म-संपदा लुटाई ।

महाप्राण निराला एक विद्रोही और क्रांतिकारी कवि थे, जिसके भाव-विचारों के केंद्र में रूढ़ियों की मार झेलता तथा शोषण और दमन पर पलती व्यवस्था के अन्याय और वंचनापूर्ण व्यूहों में पिसता हुआ मनुष्य था । उसके हितों की रक्षा के लिए निराला अपनी रचनाओं में एक मोर्चेबंदी-सी करते दिखाई पड़ते हैं । विद्रोह और क्रांति की चेतना उनके जीवन और काव्य में एक समान है । जीवन और काव्य, भीतर और बाहर, उनके यहाँ एक और अखंड हैं । जो काव्य में है वह उनके जीवन से प्रमाणित है और जो जीवन में दिखाई पड़ता है उसकी ऊर्जा उनके सर्जनात्मक संकल्प एवं पिपासा से ही जन्म लेती है । इस तरह जीवन और काव्य दोनों बिंब-प्रतिबिंब दिखाई पड़ते हैं और एक-दूसरे को प्रमाणित करते हैं । उन्होंने जो लिखा, कविता हो या गद्य, उसकी कीमत अपनी जिंदगी से चुकाई ।

निराला ने कविता को छंद के बंधन से मुक्ति दिलाई, ऐसी प्रसिद्धि है; किंतु उन्होंने काव्य भाषा, काव्य विषय और रूप आदि के क्षेत्रों में भी कविता को अनेक रूढ़ियों से आजाद किया तथा उसे नए जीवन स्रोतों से जोड़कर नए भावपथों पर अग्रसर किया । निराला ने कविता में आपातत: कायिक, वाचिक और मानसिक ऐसे परिवर्तन किए और उसके भीतर नया अवकाश, नई कामनाएँ, अभीप्साएँ और संकल्प सिरजे । इस तरह हिंदी कविता प्रौढ़तर अवस्थाओं में पहुँचकर प्राय: वैश्विक समांतरता अर्जित कर सकी । निश्चय ही हिंदी कविता की प्रकृति, संरचना और चरित्र में आए इन उछालों के पीछे महाप्राण निराला के साथ उनके अन्य सहयोगियों की भी भूमिका थी, किंतु निराला की ऊर्जस्वी अभिप्रेरणा प्रमुख और निर्णायक थी ! उन्होंने हिंदी कविता को अपरोक्ष पारिस्थितिक संवाद की स्थिति में पहुँचाया तथा उसके ऋतुचक्र एवं जलवायु में हो रहे परिवर्तनों को समुचित रचनात्मक दिशा दी । आगे के प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता आदि काव्यांदोलनों द्वारा हुए काव्य विकास को दृष्टिपथ में रखकर इन मान्यताओं की औचित्य परीक्षा सहज की जा सकती है ।

निराला ने अपनी रचना प्रक्रिया में अनेक तरह के काव्य रूप अपनाए, परंपरित काव्यरूपों में नई रूपात्मक उद्‌भावनाएँ कीं । उन्होंने गीत, प्रगीत, लंबी प्रबंधात्मक कविताएँ अनेक प्रभेदों के साथ लिखीं । यहाँ उनकी प्रसिद्ध प्रगीतात्मक रचना 'तोड़ती पत्थर' प्रस्तुत है । प्रगीत में चिलचिलाती दोपहरी में सड़क के किनारे पत्थर तोड़ती एक युवा मजदूरिन का क्रांतिकारी आशयों और संकेतों से भरा वस्तुपरक यथार्थवादी अंकन है । रेखाचित्र के विषयनिष्ठ वस्तुपरक धरातल से सहजगति में उठकर यह कविता एक गौरवपूर्ण संश्लिष्ट झंकृति छोड़ जाती है, जिसमें पाठक या श्रोता तटस्थ नहीं रह पाता ।

♦ ♦ ♦